21वीं सदी और हिंदी कथा साहित्य

संपादक
डॉ. पांडुरंग ज्ञानोबा चिलगर
सह-संपादक
प्रो. डॉ. नागराज उत्तमराव मुळे

वान्या पब्लिकेशंस, कानपुर
कानपुर - 208021 (उ.प्र.)

ISBN : 978-93-91119-77-5
मूल्य : चार सौ पंचानवे रुपये मात्र

पुस्तक : **21वीं सदी और हिंदी कथा साहित्य**
संपादक : डॉ. पांडुरंग ज्ञानोबा चिलगर
सह–संपादक : प्रो. डॉ. नागराज उत्तमराव मुळे
© : महात्मा फुले महाविद्यालय, अहमदपुर
प्रकाशक : **वान्या पब्लिकेशंस**
3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता,
कानपुर – 208 021
Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com
info@vanyapublications.com
Website : www.vanyapublications.com
Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण : **प्रथम, 2022**
मूल्य : **495.00**
शब्द–सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : सार्थक प्रेस, कानपुर

प्रास्ताविक

21वीं सदी और हिंदी कथा साहित्य यह ग्रंथ वैश्वीकरण के दौर में वैश्विक मानव मन की गहराईयों का साहित्य के माध्यम से हुए चित्रण का आलोचनात्मक दृष्टि से लिखे गए शोधालेखों का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। वैश्वीकरण, बाजारीकरण और निजीकरण के इस दौर का प्रभाव प्रत्येक मानव के ऊपर हुआ है इससे कोई भी अछूता नहीं है। जिसका विभिन्न विमर्शों के माध्यम से साहित्यकारों ने वास्तविक चित्रण किया है। साहित्य हमेशा काल का चित्रण करता है काल अनुसार वह कालातित होता है। आदिकाल से लेकर वर्तमान स्थिति तक के साहित्य में विभिन्न प्रवाह निर्माण हुए हैं। स्वातंत्र्योत्तर काल में तो साहित्य में सामान्य से सामान्यत्तर व्यक्ति का चित्रण हुआ है। तथा 21वीं सदी का साहित्य वैश्विकता का दर्शन दिलाता है।

मुझे इस बात का आनंद है कि, मेरे महाविद्यालय के हिंदी विभाग ने कोरोना जैसी भयानक महामारी के दौर में आभासी संसाधनों द्वारा राष्ट्रीय–ई–संगोष्ठी का मनुष्य विषय '21वीं सदी और हिंदी कथा साहित्य' यह था। इस विषय पर देश के दूर–दराज से पचास से अधक शोधालेख प्राप्त हुए। जिसमें उपन्यास और कहानी विधाओं का समावेश है। अतः अधिक शोधालेख होने के कारण उपन्यास विधा और कहानी विधा पर स्वतंत्र दो संपादकीय ग्रंथों का निर्माण वान्या प्रकाशन, कानपुर के सहयोग से शीघ्र ही हो रहा है। अतः प्रथम ग्रंथ '21वीं सदी और हिंदी कथा साहित्य' इसमें उपन्यास विधा से संबंधित शोधालेखों का समावेश किया गया है। जिसमें बाल वृद्ध, किसान, मजदूर, दलित, स्त्री, आदिवासी, विकलांग, नपुंसक आदि विमर्शों पर लिखे गये शोधालेखों का समावेश है। यह ग्रंथ हिंदी साहित्य जगत की अनमोल निधि सिद्ध होगा, इस बात का मुझे पूरा विश्वास है। मेरे महाविद्यालय के हिंदी विभाग ने बहुत ही मेहनत लेकर इस कार्य को पूरा किया। जिसमें '21वीं सदी और हिंदी कथा–साहित्य' इस विषय पर आयोजित राष्ट्रीय–ई–संगोष्ठि के संयोजक डॉ. पांडुरंग चिलगर तथा हिंदी विभागाध्यक्षस प्रो. डॉ. नागराज मुळे को मैं धन्यवाद देता हूँ। और भविष्य में ऐसा सारस्वत कार्य उनके द्वारा निरंतर हो इस हेतु शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्यवाद!

प्रधानाचार्य डॉ. वसंत बिरादार
महात्मा फुले महाविद्यालय,
अहमदपुर, जि. लातूर

सम्पादकीय...

किसान शिक्षण प्रसरक मंडल, उदगीर द्वारा संचलित महात्मा फुले महाविद्यालय, अहमदपुर के हिंदी विभाग द्वारा 21 नवम्बर 2021 के दिन आभासी तकनीकि के माध्यम से राष्ट्रीय ई. संगोष्ठि का आयोजन '21वीं सदी और हिंदी कथा साहित्य' इस विषय पर किया गया था। प्रस्तुत संगोष्ठि के लिए पंजाब, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, असाम, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, केरल आदि प्रांतों के हिंदी विद्वानों ने अपने शोधालेख दलित, आदिवासी, स्त्री, बाल, वृद्ध, किसान, मजदूर, विकलांग, नपुंसक आदि विमर्शों पर प्रस्तुत किये। इन सभी शोधालेखों का सम्पादकीय ग्रंथ वान्या प्रकाशन, कानपुर से प्रकाशित किया जा रहा है। इस ग्रंथ का आप सभी विद्वत् जन स्वागत करेंगे रखकर मुझे पूरा विश्वास है।

मित्रों, आप सभी मानते हैं कि, सन् 1990 के बाद सभी क्षेत्रों में वैश्वीकरण का प्रभाव तेजगति से होने लगा। बाजारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की इस आँधी में साहित्य भी प्रवाहित हो गया। क्योंकि यह सहज था अर्थात् साहित्य में समाज और व्यक्ति जीवन का वास्तविक चित्रण होता है। वैश्वीकरण से व्यक्ति प्रभावित होने के कारण उस प्रभावित व्यक्ति का चित्रण साहित्य में आना स्वाभाविक है। ऐसे परिवर्तनवादी समय के साहित्य को लेकर आयोजित की गई इस संगोष्ठि में बहुत विस्तार के साथ विचार विमर्श हुआ उसकी फलश्रुति प्रस्तुत ग्रंथ है।

मुझे विश्वास है कि, यह ग्रंथ हिंदी साहित्य जगत् में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। इस ग्रंथ के संबंध में आपके मत–प्रतिमानों की प्रतीक्षा करता हूँ। इस कार्य को पूरा करने के लिए हमें हमेशा प्रेरित करने वाली हमारी संस्था किसान शिक्षण प्रसारक मंडल उदगीर के सभी सम्मानीय पदाधिकारी तथा मेरे मार्गर्शकन आदरणीय प्रधानाचार्य डॉ. वसंत बिरादार सर के मार्गदर्शन में हमारे हिंदी विभाग द्वारा राष्ट्रीय ई–संगोष्ठी का आयोजन आप सभी के सहयोग से किया इस हेतु मेरे विभाग के अध्यक्ष प्रो. डॉ. नागराज मुळे सर का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। अतः आप सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ और आशा करता हूँ कि आप सभी पुनः ऐसे सारस्वत कार्य के लिए इस संपादकीय ग्रंथ का स्वागत करते हुए हमें पुनः प्रेरित करेंगे।

धन्यवाद!

तिथि : 7 जनवरी, 2022

सम्पादक

डॉ. पांडुरांग ज्ञानोबा चिलगर

प्रो. डॉ. नागराज उत्तमराव मुळे

अनुक्रम

1. 'रुकोगी नहीं राधिका' उपन्यास में स्त्री विमर्श
   प्रा. डॉ. शहाजी चव्हाण 9
2. 'फाँस' उपन्यास : किसान जीवन की दर्दकथा
   डॉ. ज्ञानेश्वर गणपतराव रानभरे 14
3. 21वीं सदी के उपन्यासों में नारी विमर्श
   प्रो. डॉ. बबन रंभाजीराव बोडके 22
4. आदिवासी एवं दलित विमर्श : तुलनात्मक अध्ययन
   गौरव सिंह 26
5. 21वीं सदी का स्त्री विमर्शवादी हिंसा साहित्य : युगांतरकारी परिवर्तन का आधार
   डॉ. प्रेरणा विलास उबाळे 34
6. 21वीं सदी और साहित्यकार नीरजा माधव 'व्यक्तित्व एवं कृतित्व'
   अर्चना बलवंत देशमुख 41
7. 21वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श
   डॉ. राजू हमीरसिंह देसाई 47
8. 21वीं सदी के टेलीविजन धारावाहिकी में भारतीय नारी
   जाकिर हुसैन 52
9. 'कठगुलाब' में असीमा की छवि
   कृष्णा प्रिया जे.के. 55
10. शाह क्या सचमुच शाह नहीं रहेंगे 'चन्ना' कृष्णा सोबती
    फरीदा खातून 58
11. हिंदी कथा साहित्य और विविध विमर्श
    डॉ. बबुवान मोरे 63
12. पूर्वोत्तर भारत की जनजातीय जीवन एवं लोकसाहित्य
    डॉ. नुरजाहान रहमातुल्लाह 71
13. 21वी सदी के हिंदी कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श
    डॉ. संग्राम सोपानराव गायकवाड 78
14. यमदीप : किन्नरों का यथार्थ आख्यान
    डॉ. पी. डी. चिलगर 81
15. 21वीं सदी के हिंदी उपन्यास साहित्य में स्त्री विमर्श
    प्रा. अमर आनंद आलदे 86

16. 21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में बाजारवाद और उपभोक्तावाद
डॉ. शाहू साईंनाथ गणपत 90
17. 21वीं सदी का हिंदी कथा साहित्य : विविध आयाम
प्रा. कारामुंगीकर बालाजी गोविंदराव 95
18. 21वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श
प्रा. डॉ. महावीर रामजी हाके 99
19. समाज से तिरस्कृत थर्ड जेंडर
प्रा. डॉ. विश्वनाथ किशन भालेराव 104
20. आदिवासी समाज, संस्कृति और झारखंड मुक्ति आंदोलन का चित्रण ('पाँव तले की दूब' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)
डॉ. नवनाथ गाड़ेकर 110
21. कृषि विकास एवं भूमंडलीकरण
प्रा. दिगंबर ज्ञानोबा गायकवाड 115
22. समकालीन महिला लेखन और हिंदी साहित्य
प्रा. व्ही बी खाडे 119
23. हिंदी कहानियों में वृद्ध विमर्श
प्रा. विरभद्र बिरादार 123
24. इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श
प्रा. डॉ. संतोष येरावार 127
25. 21वीं सदी के कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श
डॉ. तुकाराम वैजनाथ चाटे 134
26. इक्कीस्वीं सदी की मुबं कांड कहानी में अभिव्यक्त दलित विमर्श
डॉ. विजय गणेशराव 139
27. इक्कीसवी सदी के हिन्दी कथा साहित्य में दलित विमर्श
कैप्टन डॉ. प्रो. अनिता मधुकरराव शिदें 144
28. कृष्णा सोबती की कहानी 'दादी अम्मा' में चित्रित वृद्ध विमर्श
डॉ. आशा दत्तात्रय कांबले 147
29. 'नई रोशनी' में व्यक्त आधुनिकता बोध
माधवराव गजाननराव जोशी 152
30. 21वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श
बनकर संतोष महादेव 156

1

'रुकोगी नहीं राधिका' उपन्यास में स्त्री विमर्श

प्रा. डॉ. शहाजी चव्हाण

भारतीय संस्कृति में स्त्रियों को आदि शक्ति के विविध रूपों में सराहा गया है। आरंभ में प्रकृति–शक्ति के साथ नारी को प्रतिष्ठित कर सृजन क्षेत्र में शक्ति के साथ–साथ माता, बहन, सखी, सहचरी आदि रूपों में माना गया है। लेकिन हकीकत में नारी पीड़ा, यातना, एवंम् पुरूषों के असंह्य अंतहीन दृष्कृत्यों को आदिकाल से सहती आयी है। भारतीय संस्कृति में नारी शोषित, पीडित तथा दुर्दशा के साथ विविध बंधनों में जखड़ी हुई दिखाई देती है। नारी की दुर्दशा के संदर्भ में गुप्तजी कहते हैं– "अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आँखो में पानी।"[1] स्वतंत्रता पूर्व काल में स्त्री को पुरुष से नीचा स्थान था। बाल्यावस्था में पिता युवावस्था में पति तथा विधवा काल में जेष्ठ पुत्र के अधिन विविध बंधनो की बेड़ियों में उसका जीवन बंधिस्त था। बाल विवाह, सती प्रथा जन्म से अशुभ समझी जानेवाली स्त्री के मूल में अशिक्षा, अज्ञान, अंधविश्वास आदि समस्याओं के मूल में थे।

स्त्री विमर्श आधुनिक काल अर्थात अस्सी के दशक में प्रारंभ हुई एक सशक्त विचारधारा है जो पश्चिमी दुनिया के देशों में महिला आजदी के लिए आंदोलन के स्वर उभरे वहीं से उठे स्वरों ने भारत में भी स्त्री विमर्श को जन्म दिया। विगत कुछ वर्षो में स्त्री विमर्श ने साहित्यकारों, आलोचको तथा पाठकों का ध्यान सबसे अधिक केंद्रित किया है। स्त्री विमर्श में नारी मुक्ति तथा नारी शोषण की समस्याओं को उठाया गया है। जिसमें उषा प्रियवंदाजी जो एक कुशल लेखिकाने अपने प्रत्येक कृति में नारी जीवन के अंतर्द्वन्द्व के दर्शन दिखाई देते है। 1931 में जन्मी प्रियवंदाजीने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में स्थानकोत्तर उपाधि प्राप्ति के बाद वहीं से पीएच.डी प्राप्त की है। अंग्रेजी की विद्वान होते हुए भी उन्होंने हिंदी लेखन में साठोतरी महिला कथाकारों में प्रमुख हस्ताक्षर रहीं हैं। आपके प्रमुख उपन्यासों में पचपन खंबेलाल दिवारें, 'रुकोगी नहीं राधिका' शेष यात्रा, अन्तवर्शी, भया कबीर उदास तथा संपूर्ण कहानियाँ (कहानी संग्रह) प्रसिध्द रहे हैं। आपको 1977 में 'फूल

तो समय ही बताएगा लेकिन इसका सूक्ष्मतापूर्ण चित्रण साहित्यकार ने अपनी कहानियों में किया है।

संदर्भ

1. डॉ. महेश सिंह – भारतीय संस्कृति विविध आयाम,
2. अजय नावरिया – हंस पत्रिका
3. डॉ. बी.के. कलासवा – हिन्दी में आदिवासी जीवन केन्द्रित उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन.
4. सं. रजनी गुप्त – कुल जमा बीस

हिंदी विभाग,
यशवंत कनिष्ठ महाविद्यालय, अहमदपुर
जिला लातुर – महाराष्ट्र

18

21वी सदी के हिंदी कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श

प्रा. डॉ. महावीर रामजी हाके

21वीं शताब्दी के प्रथम दशक के सर्वश्रेष्ठ आदिवासी लेखकों में श्री हरिराम मीणा का नाम गिना जाता है। उन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा आदिवासी समस्याओं को दिखाया और उसके साथ आदिवासी सभ्य समाज में चेतना की भावना अपनी रचनाओं से उत्पन्न की है। इनकी अबतक 6 पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं। जिनमें काव्य संग्रह प्रबंध काव्य, यात्रा वृत्तांत और उपन्यास प्रमुख हैं। जिनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

1. हॉ चाँद मेरा है– इस काव्य संग्रह में हरिराम मीणा जी ने मेवाड अंचल में अरावली पर्वतमालाओं की काली घाटियो में अस्तित्व बचाने के संघर्ष में जूझती किन्तु निर्मल और शुभ ह्रदयी श्भीलणीश के जीवन के प्रति मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त देते हुए फटा घाघरा तन से लिपटा, तारनार चोली, लज्जा की रक्षा करती, अंतिम सांसे रोक ओढनी के माध्यम से जनजाति की आर्थिक विद्रुपता के प्रति संवेदना को उकेरा है। वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में मनुष्य जब संवेदनाशून्य होता जा रहा है तब हरिरामजी भीलणी की आर्थिक दुर्दशा से अवगत कराते हैं। कवि कहता है कि, श्आम आदमी कभी मरता नहीं है, वह अभावों में भी जिन्दा रहता है। दरारों से बाहर आने को प्रयासरत, नंग–धडंग कंकाल कुछ बडे, कुछ छोटे, कुछ नर, कुछ मादा। बिना किसी रक्त, गोश्त, खाल और नाडियों के ठोस हडिडयों से बने एक से नर कंकाल शायद जूझ रहें हो शताब्दियों से अपनी मुक्ति के लिए। मनुष्य की यह मुक्ति की छटपटाहट सदियों से बरकरार है, फिर भी उसके प्रति संवेदनाएँ क्षीण होती जा रही है।''[1]

2. साईबर सिटी से नंगे आदिवासियों तक– श्री हरिराम मीणा ने इस यात्रा वृत्तांत में हैदराबाद से लेकर नंगे आदिवासियों तक का चित्रण किया है। इस रचना में उन्होने प्राकृतिक, मानव और मानवेत्तर प्राणी जग की

समस्याओं का वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है कि यात्रा वृत्तांत निश्चित रुप से साहित्य की एक सशक्त विधा है अतीत में इस विधा के माध्यम से इतिहास लिखे गए है जैसे : मेगस्थनीज फाहयन, हवेनसांग से लेकर कर्नल टॉड तक हमारे सामने है।

इन्होंने जहाँ–जहाँ यात्रा की वहाँ के बुजुर्गो से पुछताछ से कुछ जानकारी प्राप्त की सबसे पहले साइबर सिटी (हैदराबाद) पहुँचे। उन्होंने मुस्लिम की हर शिल्प कलाओं को यात्रा में देखा। जैसे चारमीनार, सालरजंग म्यूजियम इसके साथ गोलकोंडा किला का दर्शन उन्हेंने किया।

इस महानगर के पीछे एक कहानी छुपी हुई है। मुगल शासन काल में मुहम्मद कुली को एक बार शिकार करते समय सौंदर्यवती औरत का दर्शन हुआ। उस सौंदर्यवती का नाम भागमती। जिस समय भागमती को देखा तभी से मुहम्मद कुली भागमती के प्यार के लिए पागल बन गया। भागमती से मिलन दैनिक कार्य बन गया। इस विषय के बारे में कुतुबशाह को पता चलता है। वह इस प्यार को खंडन करता तो भी कुली नही रुकता। एक दिन मुहम्मद कुली को प्यार के लिए महल छोड़ना पड़ा। बाद में पिता की मृत्यू उसके बाद मुहम्मद कुली गद्धीनसीन किया। भागमती की यादगार में इस शहर का बहुत विकास हुआ। इसलिए उनकी प्रेयसी भागमती के नाम से यह नगर भाग्यनगर के नाम से जाना जाता है। इस तरह की कहानी का मीणा ने इस किताब में उल्लेख किया है।

3. पोर्टब्लेअर से महाबली पुरम में– नारी नारी त्रासदी की एक अन्तर्यात्रा सहितः– हरिराम मीणा ने अपनी रचना में महिलाओं की समस्या का मुद्दा उठाया है। इन्द्र की सभा से लेकर काली घाट तक की वेश्याओं की समस्याओं का वर्णन किया गया है। समाज में महिला के उपर होने वाले अत्याचार एवं शोषण का बड़ी संवेदनशीलता के साथ चित्रण इन्होंने किया है। इनकी समस्याएँ किसी को नही दिखाई दे रही है। इनको समस्याओं से मुक्ति कौन देगा?

समाज में मुक्ति के लिए इनकी पुकार और चीत्कार को कोई अभिव्यक्ती नहीं मिल सकी। गाँवो से शहरों और झोपडी से महलों तक इनके शोषण के पदचिन्ह स्पष्ट अंकित होते रहन के बावजूद कोई विकल्प सामने नहीं आ सका। समाज में पुंजीपतियों ने सामान्य जनता का शोषण किस तरह परम्परागत कर रहे है इसका चित्रण कुबेर के माध्यम से इस प्रकार किया गया है। जैसेः

"वह कुबेर चर रहा था पहाडों को
जंगलों को
वनस्पतियों को

जीवों को
पी रहा था नदियों को
झरनों को
सरोवरों को
झीलों और
समुद्रों को"[2]

इस प्रबंध काव्य में श्रम का शोषण एवं स्त्रियों के अस्तित्व का हरण का यथार्थ चित्रण किया गया है। प्रमुख रुप से इस कृति में रचनाकार ने सामंतवादी व्यवस्था का वर्णन किया है। आदिवासी समाज में सामान्य जनता में किसी की शादी होती है तो वह वधू को प्रथम रात्रि सामंत के पास से भोग के लिए जाना ही पड़ता है यह कार्य परम्परागत रूप से चल रहा है। इस तरह सामंतवाद का यक्ष ने विरोध किया है वह खुद अपनी पत्नी यक्षिणी को सामंत के पास नही भेजता है। इस तर संघर्ष करता है। यहाँ यक्ष का आत्म संघर्ष नही है, बल्कि पूरे समाज का संघर्ष इसके माध्यम से व्यक्त हुआ है। वह अन्याय एवं शोषण का विरोध करने के लिए जनता को प्रेरित करता है जैसेः

"प्रिय यक्ष
डगमगाओं नहीं
तुम्ही तो हो प्रजा का दृढ संकल्प
डटे रहो।
संघर्ष से हटकर नही कोई विकल्प
मैं बाहर का भूत नही, तुम्हारा ही अंतर्बोध हूँ"[3]

4. सुबहे के इंतजार में– श्री हरिराम मीणाने इस काव्य संग्रह को दो भागो में विभाजित किया है। 'आदिवासी' और 'आसपास'। ये कविताएँ हमें उनकी ही नहीं, हमारी अपनी दुनिया में भी ले जाती है और हम उसके अहसास का हिस्सा हो जाते है। इन कविताओं के पाठ के बाद हर पाठक चिंतन की ओर अग्रसर होते है। इन्होंने इस कविता संकलन के माध्यम से आदिवासी संस्कृति, अन्याय, अकाल, अस्तित्व की पहचान और समस्याओं का वर्णन समाज के सामने रखा है। इस कविता संग्रह की शुरुआत आदिवासियों के महान नेता 'बिरसा मुंडा' से शुरु हुई है। बिरसा मुंडा का नाम आदिवासी क्रांतिकारियों के नामों में सर्वश्रेष्ठ हैं। हरिराम मीणा बिरसा मुंडा की याद में कविता के माध्यम से जनता को चेतना की ओर अग्रेसर करते है। जैसेः

"खेलने कूदने की उम्र में
लोगों का आबा बन गया था वह
दिकुओं के खिलाफ

सुबह नौ बजे
वह राँची की आतताई जेल
जल्लादों का बर्बर खेल
अन्ततः
बिरसा की शान्त देह''[4]

बिरसा मुंडा ने झारखंड में जन्म लिया। इनको आदिवासीयों का जननायक के रुप में पहचाना जाता है। जिसने आदिवासी समाज के आत्मविश्वास को जगाया। इन्होंने ब्रिटिश राज के लगान का विरोध किया। आदिवासियों की जमीन को अंग्रेज सरकार और जमींदार ने धोखेबाजी से छीन लिया। इसके साथ साथ आदिवासियों के उपर होने वाले शोषण का बिरसा ने विरोध किया। बिरसाने 1899 – 1900 में मुंडा आदिवासी विद्रोह का नेतृत्व किया। अंग्रेजो और शोषक वर्ग के विरुध्द आंदोल किया। इसके परिणाम स्वरुप फिरंगियो ने बिरसा को गिरफ्तार कर लिया। बिरसा बार–बार यह कहता है कि, ''जंगलों पर आदिवासियों का अधिकार है, अपने हक के लिए आदिवासी सर कटाएँगे लेकिन सर झुकाएँगे नहीं।''[5]

इस तरह बिरसाने अपनी वीणा से जनता के मन में चेतना उत्पन्न की है। ब्रिटिश सरकारने यह सोचा कि इसको जिंदा छोड दिया तो आंदोलन और खतरनाक होगा। इस कारण से बिरसा की जेल में हत्या कर दी।

5. 'आदिवासी लड़की'– इस कविता के माध्यम से अपना आक्रोश श्री हरिराम मीणा ने प्रकट किया। रचनाकार की भूल एवं त्रुटि को काव्यात्मक रुप में इस प्रकार व्यक्त किया है जैसे–

''गोल–गोल गाल
उन्नत उरोंज
गहरी भूमि
पुष्ट जंधाएँ
मदमाता यौवन''[6]

उपर्युक्त कविता से हमें यह पता चलता है कि जिन रचनाकारों ने आदिवासी समाज जीवन को बाहर से देखकर रचनाएँ की है। उन्हें यहाँ की समस्याएँ कैसे पकड़ में आयेगी? उन रचनाकारों की रचनाओं में अधिकतर काल्पनिक सौंदर्य बोध दिखाई देता है। इसकी वजह से आदिवासी युवतियों के वर्णन में गोल गोल गाल, उन्नत उरोज, आकर्षक नाभी, पुष्ट जँघाएँ और मदमाते यौवन के अलावा उनके दुख दर्दोका कुर यथार्थ उन्हें कही नजर नही आता।

श्री हरिराम मीणा ने इस कविता के माध्यम से आदिवासी समाज और लडकियों की समस्याएँ, पीडा, दुख दर्द को हमारे सामने रखा। आदिवासी लड़की जंगली काँटे, धूप श्रम में किस तरह की समस्याओं का सामना कर रही है। इस तरह की जानकारी हमें कवि की कविता से प्राप्त होती है। जंगल में होने वाली समस्याओं का यथार्थ वर्णन उन्होंने अपने रचना कर्म में किया है। जो देखी हुई घटनाएँ एवं समस्याएँ है उनको हमारे समाज के सामने रखा है।

इस प्रकार श्री हरिराम मीणा ने आदिवासी की मुल समस्याओं, उनकी भावनाओं का मार्मिक वर्णन करते हुए, आदिवासियों में सामाजिक चेतना उत्पन्न करने का प्रयास किया है। साहित्यकारों, कवियों का भी यही कर्तव्य है कि, वर्तमान में अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे आदिवासियों के प्रति सकारात्मक सहयोग दे, जिससे उन्हे सामाजिक तथा पारिवारीक बदलाव में सहायता मिलें।

संदर्भ

1. आदिवासी केंद्रित हिंदी साहित्य : डॉ.उषा कीर्ति राणावत, डॉ.सतीश पाण्डेय, डॉ. शीतला प्रसाद दुबे, पृ. 230
2. रोया नही था यक्षः श्री हरिराम मीणा, पृ. 26
3. वही पृ. 233
4. सुब के इंतराज में : श्री हरिराम मीणा पृ. 10
5. युध्दरत आम आदमीः श्री हरिराम मीणा पृ. 46
6. सुबह के इंतजार में : श्री हरिराम मीणा पृ. 17

शोधकर्ता
असोशिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, गंगाखेड